REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2022

''छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद का युगबोध''

रामिलन अहिरवार
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

छायावाद की पृष्ठभूमि किसी देश की समसामयिक परिस्थितियाँ प्रभाव से निर्मित हैं। हर नई काव्य चेतना को संवरने में अनेक विचारधाराओं का प्रभाव होता है और हर नयी मान्यताओं के पीछे समकालीन साहित्य में आने वाले निरन्तरता का प्रभाव होता है। अतः छायावादी साहित्य को विदेशी और स्वदेशी दोनों की मान्यताओं ने माजकर चमकाया है। इतना अवश्य है कि छायावाद को रोमांटिक काव्य की अनुक्रित और बंगला कविता का प्रभाव से आबद्ध करना ही उचित है।

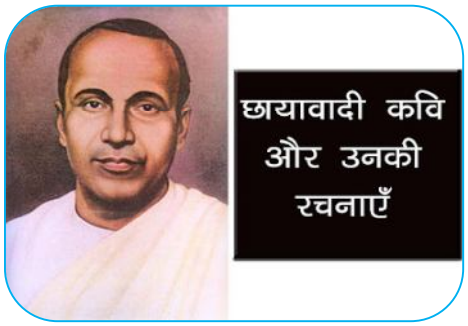

मुख्य शब्द – छायावाद, छायावादी साहित्य, समकालीन साहित्य एवं रोमांटिक काव्य।

प्रस्तावना –

छायावाद विशाल सांस्कृतिक चेतना का सम्पुन्जन है जिस युग की चर्चा हम कर रहे हैं। वह साहित्यिक और सामाजिक परम्पराओं के विरुद्ध विरोध का युग था। क्योंकि सम्पूर्ण समाज एक अनिश्चय की स्थिति में पड़ा था। तद्युगीन कवियों के वाणी में उल्लास, विद्रोह, नवनिर्माण, और संगीत की उत्कट अभिलाषा सुनायी देने लगी थी, काव्य के क्षेत्र में कुछ नयी प्रवृत्तियाँ विकसित हुयीं। छायावादी और रहस्यवादी प्रवृत्तियों की रोमांटिक काव्यपद्धति के अन्तर्गत सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति हुयी। इन पर बंगला काव्य का भी काफी प्रभाव पड़ा। रहस्यवाद के पुनरुत्थान के कारणों में बंगला साहित्य का भी हाथ है जिस काव्य शैली में छायावादी चिन्तन धारा व्यक्त हो रही थी, काफी अंशों में उन पर सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जागरण की प्रतिक्षाया दृष्टिगोचर हो रही थी। छायावाद युग के प्रथम उद्यान के कवियों ने अंग्रेजी तथा बंगला से प्रेरणा ग्रहण की। हिन्दी साहित्य के संदर्भ में छायावादी काव्य युगानुकूल विज्ञान प्रसूत नवचिंतन धारा के रूप में प्रकट हुयी है। विश्व के क्षितिज पर विज्ञान का जो आलोक फैला जिसे हिन्दी साहित्य में छायावादी साहित्य के रूप में प्रतिष्ठा मिली।

विश्लेषण –

डॉ. रमेशचन्द्र वर्मा के अनुसार समस्ट रूप में इसमें वाह्य जगत के अपेक्षा अन्तर्जगत (कवि का भाव लोक), बौद्धिकता की अपेक्षा, भावात्मकता, जीवन के यथार्थ की अपेक्षा, मनःलोक की मनोरम कल्पना, नग्न सत्य की कल्पना, वैशिष्ट सौन्दर्य, संघर्ष की अपेक्षा प्रेम और परम्परा की अपेक्षा नूतनता के प्रति अधिक मोह रहा है।'' छायावादी काव्यधारा के विकास को हम तीन रूपों में विभाजित कर सकते हैं।

प्रथमतः छायावाद का प्रारम्भिक स्वरूप है जिसमें मैथिलीशरण गुप्त, माखन लाल चतुर्वेदी, मुकुटधर पाण्डेय, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुमित्रानन्दन पंत, तथा जयशंकर प्रसाद की रचनायें आती हैं।

द्वितीयतः छायावाद के प्रौढ़ स्वरूप के दर्शन होते हैं। जिनमें प्रसाद पंत निराला तथा महादेवी वर्मा की वे रचनायें आती हैं जो 1920 से 1936 ई. तक लिखी गयी हैं।

तृतीय अवस्थामें छायावाद की यथार्थवादी तथा सर्वोतोमुखी वे रचनायें आती हैं जिसके सृजन में निराला, पंत, रामकुमार वर्मा, हरिवंशराय बच्चन, रामेश्वर शुक्ल अंचल, बालकृष्ण शर्मा नवीन, नरेन्द्र शर्मा की रचनाओं का स्वर सुनयी देता है।

इस प्रकार हम छायावादी प्रमुख कवि और युगबोध की अभिव्यक्ति के संदर्भ में जिनकी रचनाधारा का उल्लेख करने जा रहा हूँ उनमें प्रमुख कवि और उनकी रचनाओं का परिचय और उनका युगबोध सीमित न होकर व्यापक है उन प्रमुख कवियों में निम्न रचनाकारों का नाम शीर्षस्थ है –

(क) जयशंकर प्रसाद
(ख) सुमित्रानन्दन पंत
(ग) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
(घ) महादेवी वर्मा।

जयशंकर प्रसाद –

जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी के एक सम्पन्न परिवार में (1890–1937) में हुआ था, यह परिवार सुघनी साहु के नाम से प्रसिद्ध था। उनकी शिक्षा कक्षा 8 तक रही है, इन्होंने घर पर ही हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू आदि का अध्ययन किया। इनके ऊपर सैव दर्शन का गहरा प्रभाव था। प्रसाद की हिन्दी के एक युगप्रवर्तक कवि थे। साथ ही एक सफल साहित्य श्रृष्टा थे, एक कुशल दार्शनिक और असाधारण समीक्षक थे।

युगबोध की दृष्टि से यदि हम प्रसाद के व्यापक मानवीय स्वरूपों को देखे तो यह स्पष्ट होता है कि वे विशेष आदर्शों के उपासक युग में नवीन वस्तु स्थिति का, नये युग की स्वस्थ्य मनुष्यता का संचार करने वाले युग पुरुष थे। इन्होंने अनेक छायावादी रचनायें लिखी जो इस प्रकार है –

उर्वसी	1909
वन मिलन	1909
प्रेमराज	1909
कानन कुसुम	1913
करुणालय	1913
झरना	1918
आँसू	1925
महाराणा का महत्व	1914
लहर	1935
कामायनी	1935

प्रसाद जी ने झरना और कानन कुसुम में बाद में कुछ छन्द जोड़कर उसे नया आकार दिया, इसी प्रकार प्रेम पथिक जो कि पहले ब्रज भाषा में लिखा था बाद में खड़ी बोली में लिखा तथा आँसू में 64 नये छन्द जोड़कर उसकी मूल्यवत्ता में वृद्धि की। झरना के पूर्व की सभी रचनायें द्विवेदी काल में लिखी गयी थीं। आँसू प्रसाद जी का एक स्मृत काव्य है।

छायावाद के सारे समृद्ध फूलों और शूलों को समाहित करने वाली कृति ने छन्द शैली, संगीत, शब्द योजना आदि सभी दृष्टियों से हिन्दी के अनगिनत कवियों को प्रभावित किया है, प्रेरणा दी है और नवयुवकों के हृदय की हार रही है, है भी।''

लहर में प्रसाद जी ने प्रकृति चित्रण का मनोरम वर्णन किया है इसके साथ ही रहस्यवादी भावनाओं, प्राणयानुभूति तथा आनन्दवाद के दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक पहलुओं ने प्रसादकी गरिमामयी भावना को आध्यात्मिक चेतना, संस्कार की गरिमा और अनुभूति की गहराई देकर साहित्य की भावधारा को एक विशिष्ट रूप में ढाला है। कामायनी प्रसाद जी की अमर रचना है, उन्होंने कल्पना का पुट देकर उसे अत्यन्त लोकग्राही बना दिया है। इस महाकाव्य में कुल 15 वर्ग हैं जिसका नामकरण मनोविकारों के आधार पर किया गया है। डॉ. द्वारका प्रसाद सक्सेना का वियारहै – ''प्रसाद की कामायनी छायावाद की सर्वप्रथम और अन्तिम ऐसी रचना है जो महाकाव्य के विशिष्ट लक्षणों से युक्त है, जिसमें छायावाद के समस्त गुण, दोष विद्यमान हैं और जो छायावाद युग का पूर्ण प्रतिनिधित्व कर रही है।

डॉ. नगेन्द्र के मतानुसार – ''कामायनी आधुनिक हिन्दी साहित्य की सर्वाधिक विवादास्पद और विवादों के रहते हुये भी कदाचित महान उपलब्धि है।''

आधुनिक साहित्य के अन्तर्गत आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी ने भी इसी प्रकार अपना मत व्यक्त किया है – उनकी दृष्टि में प्रसाद जी छायावाद के मेरुदण्ड हैं, छायावादी साहित्य में उनका स्थान अप्रतिम है।''

साहित्यिक दृष्टि से छायावाद की विशिष्टता उसके कल्पनाशील सौन्दर्यबोध में है, जो नैसर्गिक और अनुभूतमूलक हैं। साहित्य की सभी विधाओं में उसकी अनेक रंगीन छवियाँ मिल जाती हैं, उस व्यापक चित्रणके कारण प्रसाद के सहृदयता, कल्पनाबोध, जीवन दर्शन में उनकी क्रियाशीलता का पूरा अवसर प्रदान किया है। युग की नवीन आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, आकांक्षाओं की अन्तर्मुखी भावनाशील प्रकृति दर्शन से प्रसाद के साहित्यिक युगबोध का दर्शन हुआ। उनका आत्मबोध प्रायः रोमांटिक कल्पना पर आधारित होकर विकसित होता गया। इसीलिए उनके साहित्यिक युगबोध की अभिव्यक्ति रमणीय वातावरण में सूक्ष्म रहस्यमय आवरण से युक्त होकर मादक लगते हैं। मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ–साथ साहित्यिक युगबोध की भावना का विकास भी होता जाता है।

''जीवन का कोमल तन्तु बढ़े, तेरी ही मंजुलता समान
चिर नग्न प्राण उसमें लिपटे, सुंदरता का कुछ बढ़े मान।''

कवि ने नारी रूप को सौन्दर्य का प्रतिमान माना है। प्रकृति ने मानवीय रूप की सजीवता और मानवीरूप में प्रकृति की नैसर्गिकता को प्रदर्शित करते हुये उन्होंने सौन्दर्य की परिभाषा के अनुरूप सजीवता को महत्व दिया है। नारी सौन्दर्यबोध की कमनीयता के साथ, प्रकृति मानव सुन्दर हो उठी है।
पश्चिम जलधि में –

''मेरी लहरीली नीली अलकावली समान
लहरे उठती थीं मानो चूमने को मुझको
और सास लेता था समीर मुझे छूकर।''

प्रसाद की मान्यता है कि रूप गर्व के साथ भोग दृष्टि के योग से जीवन की स्वस्थता नष्ट हो जाती है। छायावादी युगबोध की यही कहनी यहाँ प्रस्तुत की गयी है –

''नारी यह रूप तेरा जीवित अभिशाप है
जिसमें पवित्रता की छाया भी पड़ी रहे।''

स्वच्छन्दतावादी कवि ने सामाजिक मर्यादा से आबद्ध कुल वधू के सौन्दर्य पर अधिक ध्यान नहीं दिया। तितली और चूड़ीवाली इसके अपवाद हैं। फिर भी प्रसाद कुलवधू की लज्जा से उत्पन्न सौन्दर्य की गम्भीरता, उदात्तता और गरिमा की अनभिज्ञ नहीं है। लज्जा शालीनता गौरव और महिमा सिखलाती है।'' सौभाग्यवती के सौभाग्य में प्रेम से दीप्त सौन्दर्य की शोभा है। इसलिए सौन्दर्य में ''भोला'' सुहाग इठलाता है।'' नारी सुलभ

लज्जा की गरिमा और सौभाग्य की दीप्ति को ग्रहण करते हुये भी प्रसाद ने स्वच्छन्द रूप और व्यवहार को ही आदर्श माना है। उनके साहित्य में मर्यादा के संकोच का कहीं निरूपण नहीं हुआ है।

निष्कर्ष –

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि छायावादी प्रमुख कवियों में प्रसाद की युगबोध की अभिव्यक्ति आधुनिक युगबोध से संपृक्त है। उनके अन्तस चेतना अतीत और भविष्य से सुसंयुक्त रूप में देखने के लिए क्रियाशील दिखाई पड़ती है। प्रसाद का युगबोध युग मीमांसा का बोध कराता है। सृष्टि के सौन्दर्य का सैद्धान्तिक और व्यावहारिक समग्र तालिक निरूपण प्रसाद साहित्य में सन्निहित है। यही कारण है कि प्रसाद के अनुभूति में मनुष्य आनन्द के उच्चतम शिखर तक पहुंच पाता है।

संदर्भ –

प्रसाद का सम्पूर्ण काव्य	:	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण, 2008
चित्राधार	:	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2009–10
प्रेमपथिक	:	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2009–10
करुणालय	:	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2009–10
महाराणा का महत्व	:	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2009–10